Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2021 SHISRRJ | Volume 4 | Issue 2 | ISSN : 2581- 6306

वर्तमान विसंगतियाँ और बौद्ध दर्शन

डॉ0 पूनम सिंह,
नेट, पी0एच0डी0 (राजनीति शास्त्र)

Article Info
Volume 4, Issue 2
Page Number : 158-162

Publication Issue :
March-April-2021

Article History
Accepted : 01 April 2021
Published : 10 April 2021

आज पूरा विश्व तमाम विसंगतियों से प्रभावित है, जिससे मानव समुदाय कराह रहा है और इनसे छुटकारा पाने के लिए धर्मों के तरफ रुख कर रहा है। वैसे देखा जाये तो मानव समुदाय वैज्ञानिक शोधों के द्वारा तमाम प्रकृति के रहस्यों को उद्घाटित करने में भी सफल रहा है। यहाँ तक कि वह दूसरे ग्रहों पर मानव बस्ती बसाने की योजना बना रहा है, वहीं दूसरी ओर परमाणु शक्तियों से लैस होने के होड़ में पूरा विश्व लगा है। एक तरह से अपने विनाश की पृष्ठभूमि मानव समाज तैयार कर लिया है। आज मानव समुदाय पूर्ण रूप से संचार साधनों से भी लैस होता जा रहा है। जो पर भर में पूरे विश्व में एक देश से दूसरे देश के किसी भी जगह संदेश पहुँचा रहे हैं, सुपर कम्प्यूटर बनाकर आंकड़ों का लेखा–जोखा रखने में सक्षम है, लेकिन इस वैश्विक युग में भी मानवीय वेदना का अन्त होता नहीं दिख रहा है। आज पूरे विश्व में भूख, गरीबी, लाचारी, बीमारी से त्रस्त, आधी आबादी कहलाने वाली महिला वर्ग के साथ बढ़ती बर्बरता व उपभोग की सामग्री बनाने की प्रक्रिया में देह विमर्श, बढ़ती आबादी, घटता जनसंसाधन, धर्म के नाम पर हिंसा, बढ़ते अमीरों की फौज इत्यादि समस्याएँ बढ़ी हैं। मानव समुदाय भौतिकता की अंधी दौड़ से थक चुका है, वह शान्ति के लिए व्याकुल हो उठा है, वह सांसारिक जीवन की इन विसंगतियों से मुक्त होना चाहता है और घृणा, ईर्ष्या जैसी विकृतियों को त्याग करके प्रेम, दया, करुणा, सेवा, परपीड़ानुभूति और परोपकार को अपनाना चाहता है। ऐसी स्थिति में मानव समुदाय को बौद्ध दर्शन ही मार्गदर्शन कर सकता है।

समसामयिक परिदृश्य में बौद्ध धर्म की जन्मभूमि भारत भी कम प्रभावित नहीं है। भले ही बुद्ध की कर्मभूमि और जन्मभूमि रही है, लेकिन भारत में बौद्ध धर्म दर्शन सिमट गया है, लेकिन आज पूरा विश्व बौद्ध दर्शन के प्रति आकर्षित हो रहा है और अपने दुःखों का निवारण बौद्ध दर्शन में ही खोज रहा है। बुद्ध ने भारत को विश्वगुरू होने का सामर्थ्य दिया। उन्होंने अपने दर्शन में यह भी बताया कि दुनिया में जो कुछ भी घटित होता है वह अकारण नहीं होता है। उसके पीछे कोई न कोई कारण अवश्य होता है। जैसा कि बौद्ध के उत्पन्न होने का कारण तत्कालीन परिस्थितियाँ थीं, जिस वैदिक समाज ने उत्पादन में लौह तकनीक के प्रयोग तथा प्रसार की महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई, उसी समाज की अनेक प्राचीन मान्यताएँ आर्थिक प्रगति के अनुकूल नहीं थीं। ब्राह्मण तथा क्षत्रिय वर्ग को व्यापार में संलग्न होने की मनाही थी। वैश्य वर्ग सम्मान की दृष्टि से समाज में तीसरी श्रेणी में आता था, लेकिन वर्तमान में जातिगत् विचारधाराओं की दीवारें टूटने के कगार पर हैं। आज तो सभी वर्ग के लोग व्यापारिक धन्धे कर रहे हैं। सामुद्रिक व्यापार को वैदिक धर्म में निन्दित माना गया, लेकिन बौद्ध धर्म के अनुसार समुद्री व्यापार निन्दनीय नहीं था। यह स्वाभाविक ही था कि वैश्य

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

वर्ग बौद्ध धर्म को प्रोत्साहन देता। अहिंसामूलक बौद्ध धर्म की शिक्षाएँ सिद्धान्त रूप में साम्राज्यवादी युद्धों के विपरीत पड़ती थी। इन गुटों से व्यापारी वर्ग की ही अधिक क्षति होती थी। इसके अलावा जाति भेदभाव, ऊँच–नीच की भावना तथा धार्मिक आडम्बरों के कारण बौद्ध दर्शन और लोकप्रिय हुआ। उस समय की आम जनता इसके प्रति आकर्षित हुई। बौद्ध के महानिर्वाण के तुरन्त बाद ही बौद्ध धर्म की पहली संगीति हुई, जिसका उद्देश्य था बुद्ध के उपदेशों को सुरक्षित करना। बौद्ध धर्म के बारे में वृहद् जानकारी पालि त्रिपटिक से ही प्राप्त होता है।

बौद्ध धर्म का मूलाधार चार आर्य सत्य हैं इस धर्म के सारे सिद्धान्त तथा बाद में विकसित विभिन्न दार्शनिक मत–वादों के ये ही आधार हैं। ये चार आर्य सत्य हैंः–

1. दुःख
2. दुःख समुदाय
3. दुःख निरोध
4. दुःख निरोध–गामिनी प्रतिपदा।

इन दुःखों से बचने के लिए आठ मार्ग बुद्ध ने बताये हैंः–

1. सम्यक् दृष्टि अर्थात् सत्य और असत्य तथा सदाचार और दुराचार के विवेक द्वारा आर्य सत्यों की सही परख।
2. सम्यक् संकल्प अथवा इच्छा तथा हिंसा से रहित संकल्प करना।
3. सम्यक् वाणी, जिसका तात्पर्य है, सदा सत्य तथा मृदुवाणी का प्रयोग करना, जो धर्म सम्मत हो।
4. सम्यक् कर्म या अच्छे कर्मों में संलग्न होना।
5. सम्यक् व्यायाम अर्थात् विवेकपूर्ण प्रयत्न।
6. सम्यक् स्मृति अर्थात् अपने कर्मों के प्रति विवेक तथा सावधानी को निरन्तर स्मरण करना।
7. सम्यक् आजीव, सदाचार के नियमों के अनुकूल जीविकोपार्जन करना।

इन आठ मार्गों के अनुसरण से मानव अपने दुःखों से छुटाकारा पाकर अपने जीवन को खुशहाल बना सकता है। बौद्ध धर्म मूलतः अनीश्वरवादी है। सृष्टि का कारण ईश्वर को नहीं माना गया है। इसके पीछे यह तर्क दिया गया है कि अगर ईश्वर को संसार का रचयिता माना जाये तो उसे दुःख को उत्पन्न करने वाला भी मानना होगा। वास्तव में बुद्ध ने ईश्वर के स्थान पर मानव को प्रतिष्ठित किया। यही कारण है कि इस धर्म में आत्मा की कल्पना ही नहीं की गयी है, क्योंकि बौद्ध यह मानता है कि जब व्यक्ति का अवसान हो जाता है तभी आत्मा का भी अवसान हो जाता है। यह कोई शाश्वत वस्तु नहीं है, जो अगले जन्म तक विद्यमान रहे, किन्तु बौद्ध धर्म में पुनर्जन्म की मान्यता है। यही कारण है कि अगले जन्म में भी कर्मफल की मान्यता सही सिद्ध होती है, लेकिन इन कर्मों को अगले जन्म में ले जाने का वाहक आत्मा नहीं बल्कि चेतना होती है। जैसे दुःख समुदाय का कारण जन्म है, उसी प्रकार जन्म कारण भी कर्म–फल उत्पन्न करने वाला अज्ञान रूपी चक्र है, जिसे पारिभाषिक शब्दावली में प्रतीत्य समुत्पाद कहा जाता है, अर्थात् 'प्रतीत्य (इसके होने से)' समुत्पाद (यह उत्पन्न होता है)। इस चक्र के 12 क्रम है, जो दूसरे को उत्पन्न करने के कारण है। ये हैं :– 1. अविद्या, 2. संस्कार, 3. विज्ञान, 4. नामरूप, 5. खड़ायतन, 6. स्पर्श, 7. वेदना, 8. तृष्णा, 9. उपादान, 10. भव, 11. जाति, 12. जरामरण।

जीवन चक्र के इन बारह कारणों में से प्रथम दो पूर्वजन्म से सम्बन्धित है तथा अन्तिम दो भावी जीवन से और शेष वर्तमान जीवन से सम्बन्ध रखते हैं। यह जीवन–मरण का चक्र मृत्यु के साथ समाप्त नहीं होता। मृत्यु तो केवल नवीन जीवन के प्रारम्भ होने का कारण मात्र है। इस हेतु चक्र का अन्त करने के लिए अविद्या का अन्त आवश्यक है और ज्ञान ही अविद्या का उच्छेद करके व्यक्ति को निर्वाण की ओर ले जाने में समर्थ है। प्रतीत्य समुत्पाद बौद्ध दर्शन तथा सिद्धान्त का मूल तत्व है। अन्य सिद्धान्त भी इसी में निहित है। जन्म के कारण रूपी कर्म का सिद्धान्त भी इसी पर आधारित है। अविद्या तथा कर्म दूसरे को उत्पन्न करने में सदैव सक्रिय रहते हैं। बौद्ध दर्शन का क्षण–भंग वाद कभी प्रतीत्य समुत्पाद से ही उत्पन्न सिद्धान्त है। संसार की सभी वस्तु विशिष्ट परिस्थिति तथा कारण से पैदा होता है।

चार आर्य सत्यों के ज्ञान तथा अनुशीलन से निर्वाण प्राप्ति मनुष्यों को जरामरण के चक्र से छुटकारा दे सकती है। निर्वाण प्राप्त करना व्यक्ति का स्वयं अपना उत्तरदायित्व है। इसके लिए सत्कर्म तथा सदाचार का मार्ग अपनाना अनिवार्य है। निर्वाण प्राप्ति के लिए दस अनुशीलनों पर अत्यधिक बल दिया है। 1. अहिंसा, 2. सत्य, 3. अस्तेय (चोरी न करना), 4. व्यभिचार न करना, 5. मद्य का सेवन न करना, 6. असमय भोजन न करना, 7. सुखप्रद बिस्तर पर न सोना, 8. धन संचय न करना, 9. स्त्रियों का संसर्ग न करना, 10. अपरिग्रह (जरूरत से ज्यादा सम्पत्ति का अर्जन न करना)।

इसके अलावा बौद्ध धर्म में संघ का भी महत्त्वपूर्ण स्थान है जो त्रिरत्न का एक अनिवार्य अंग है। आदर्शमय जीवन का केन्द्र होने का कारण इसे समाज का आदर प्राप्त हुआ। दूसरे संघ में प्रव्रज्या लेने वाले भिक्षुओं द्वारा अनवरत धर्म उपदेश में व्याप्त रहने के कारण यह धर्म प्रचार का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण साधन हो गया। सारनाथ में धर्म का उपदेश देने के बाद अपने प्रथम पाँच ब्राह्मण शिष्यों के साथ बुद्ध ने संघ की स्थापना की। इसके बाद यश नामक धनाढ्य व्यापारी के साथ अन्य वैश्यों को भी संघ का सदस्य बनाया।

गौतम बुद्ध के बौद्ध दर्शन तत्कालीन सामाजिक विसंगतियों के कारण आम लोगों में बहुत प्रसिद्ध हुआ। ऐसा नहीं कि वैदिक धर्म, बौद्ध धर्म के अपेक्षा बहुत खराब था, बल्कि धर्म के बाद में चलकर तमाम विकृतियाँ आ गयाी थीं। जैसे वर्तमान में बौद्ध धर्म में भी वही आडम्बर आ गये हैं जो बौद्ध धर्म के पहले वैदिक धर्म में था। कोई भी धर्म बुरा नहीं है। अगर सभी धर्मों के सारांश को निकाला जाये तो सभी धर्मों का एक ही संदेश निकलेगा, वह है मानव कल्याण। जीव–जन्तुओं पर दया करना, सहिष्णुता इत्यादि। लेकिन आज मनुष्य भौतिकता के वशीभूत होकर जीवन की जरूरतों को अनावश्यक बढ़ाने में तल्लीन है और अपनी शाश्वत पूँजी को स्वार्थवश नजरअंदाज कर रहा है, जिसके परिणाम स्वरूप उसकी कीमत उसे उसी के द्वारा उत्पन्न हुई समस्याओं के रूप में चुकानी पड़ रही है। आज बुद्ध के अपरिग्रह के सिद्धान्त को भारत में फैले भ्रष्टाचार की विषबेल एक तरह से नकार रही है। यही नहीं विश्व स्तर पर भ्रष्टाचार का दानव फैल चुका है, जिसके कारण महंगाई, वैश्विक, आर्थिक मंदी फैला है। आज भौतिक सुख साधनों के अतिशय उपयोग की प्रवृत्ति के कारण नैतिकता गौण होती जा रही है। स्वार्थपूर्ति के लिए अनुचित साधनों को अपनाया जाता है, जिसकी लाठी उसकी भैंस वाली कहावत चरितार्थ हो रही है। आज नेताओं की कथनी और करनी, सिद्धान्त और व्यवहार में एकरूपता नहीं है। स्थिति इतनी भयावह होती जा रही है कि राजनति में अपराधी भी प्रश्रय पाते हैं। इस कारण नैतिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है सफल और सुखमय जीवन के लिए नैतिकता का बड़ा महत्त्व है और वही अपने कर्तव्यों का पालन करता है और अधिकारों का दुरुपयोग नहीं करता है।

लेकिन वही भारत जो विश्व को अहिंसा का पाठ पढ़ाया, उसी के द्वारा हथियारों के निर्यात की तस्वीर देखें तो दुनिया का सबसे बड़ा हथियार आयातक देश बन गया है। भारत के बाद दूसरे नम्बर पर सऊदी अरब और अन्य देश इस सूची में आने वाले दक्षिण कोरिया, सिंगापुर, आस्ट्रेलिया, पाकिस्तान, चीन, ग्रीस आदि हैं। हालांकि इन हथियारों के होड़ के अलावा भारत एक सभ्यता और संस्कृति का नाम है एवं बुद्ध और महात्मा माँधी की जन्मभूमि और कर्मभूमि है। ऐसे में हम भारतीय हथियारों को बड़े पैमाने पर खरीद कर क्या सन्देश विश्व को देना चाहते हैं, लेकिन यह भी सच्चाई है कि विश्व के अन्य देशों के बीच हथियारों को इकट्ठा करने की जो होड़ लगी है, सुरक्षा के नाम पर तो भारत भी विश्व के देशों में अपने आपको सुरक्षित रखने के लिए हथियारों का संग्रह करने में मजबूर है। आज हथियारों के होड़ ने विश्व को खतरे में डाल दिया है। ऐसी स्थिति में बुद्ध की अहिंसा की नीति विश्व को विध्वंसक हथियारों के ढेर के विस्फोट से बचाने का काम कर सकता है।

वहीं मनुष्य अपनी इच्छाओं की पूर्ति हेतु प्रकृति का लगातार दोहन कर रहा है, जिससे पर्यावरण का संतुलन असंतुलित हो गया है। आज दुनिया की आधी आबादी शहरों में रहना चाहती है, जिससे यह अनुमान लगाया जाता है कि 2050 तक यह अनुपात बढ़कर 70 प्रतिशत हो जायेगा और उस समय तक विकसित देशों की 14 प्रतिशत और विकासशील देशों की मात्र 33 प्रतिशत जनसंख्या शहरी सीमा से बाहर होगी। इस तरह से बढ़ते शहरीकरण की वजह से जनसंख्या वृद्धि, ग्रामीण शहरी आवास, राष्ट्रीय नीतियाँ, आधारभूत ढाँचा, राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक विसंगतियाँ उत्पन्न हुई हैं। इसके अलावा शहरों में गंदी बस्ती, असमानता, हिंसा, बीमारी जैसी प्रवृत्तियाँ भी उभरी हैं।

नगरीकरण एक तरह से एकांकीपन, चरम वैयक्तिकता और आगे बढ़ने की होड़ आदि ने भी इस सामूहिकता की भावना को कमजोर किया है। इसी के साथ–साथ एक चीज जो बच्चों में यहाँ तक कि युवा पीढ़ी में भी आती जा रही है। शारीरिक खेल जो सामूहिकता की भावना को मजबूत करते थे वे अब टीवी, विडियो, गेम आदि तक सीमित होते जा रहे हैं और रही सह कसर इण्टरनेट ने पूरी कर दी है। कम्प्यूटर और इण्टरनेट के महत्त्व को नकारा नहीं जा सकता, फिर भी इण्टरनेट कम्प्यूटर दोनों ने पोनोग्राफी जैसी चीजों से हमारी युवा पीढ़ी की मानसिकता को विकृत ही किया। आज मानव नैतिकता विहीन होता जा रहा है यही नहीं आज का युवा नाश का आदी होता जा रहा है। इसके अलावा पूरे विश्व में हिंसा की गतिविधियाँ भी तेज हुई हैं। इण्टरनेट से बनने वाली दुनिया के नागरिकों का समाज अब 21 वीं सदी के नेट से जुड़े नागरिकों का समाज बन रहा है। इस समाज में पारस्परिकता, प्रेम, बन्धुत्व, मनुष्यता, सहानुभूति व मानवीय संवेदन जैसे सनातन मूल्यों का अभाव साफ देख रहा है। इनके अभाव में सबसे अधिक प्रभावित होने वाला बच्चों का बचपन ही है। बच्चों की इसी पीढ़ी में सफलता प्राप्त करने की तीव्र इच्छा तो है, परन्तु जीवन में असफल होने का धैर्य व संयम की मात्रा उनमें शून्य है।

भारतीय समाज का अवलोकन करें तो आज की सबसे बड़ी विसंगतियों इस वैश्विक युग में लिंगानुपात का घटना है। लिंगानुपात पर यूनीसेफ की वार्षिक रिपोर्ट 'स्टेट ऑफ द वर्ल्डस चिल्ड्रेन 2008' के अनुसार लड़कियों की स्थिति को लेकर भारत का स्थान पाकिस्तान और नाइजीरिया से भी नीचे है। इसके अलावा आज पूरे विश्व में भय और शंका का वातावरण निर्मित हो गया है। आतंकवाद ब्रिटेन, फ्रांस, जर्मनी के बड़े शहरों को अपना निशाना बना रहे हैं। भारत में तो कहीं भी अपने हिंसक गतिविधियों का निशाना बना लेते हैं, जिस पर वर्तमान सरकार तुष्टीकरण की नीति के तहत हल्की–फुल्की कार्यवाही करके फिर खामोश हो जाती है। अब आंतकवाद बहुकेन्द्रीय बन चुका है। पाकिस्तान के वजीरिस्तान, अफगानिस्तान के साथ सोमालिया इत्यादि ऐसे क्षेत्र हैं। हालांकि इसकी धुरी अभी पाकिस्तान बना है। स्पष्ट है कि विकास के साथ–साथ आज का आधुनिक समाज उत्तरोत्तर हिंसक होता जा रहा है। विकास की हिंसक यात्रा एक ऐसे पथ पर चल पड़ी है, जहाँ से लौटना फिलहाल सम्भव नहीं दिख रहा है। जहाँ विकास ने पैर ज्यादा फैलाये हैं वहाँ इस तरह की सामाजिक बुराईयाँ भी ज्यादा फैली हैं।

प्राकृतिक सम्प्रदाओं के दोहन पर आधारित विकास के मूल में प्रकृति का क्षरण या विनाश अन्तर्निहित है। कृषि योग्य मिट्टी की जैविकता को रसायनों से नष्ट किया जा रहा है। जंगलों का सफाया किया जा रहा है, खनिज संसाधनों का दोहन निरन्तर जारी है। विकास और आधुनिकता के आयातित संस्करण में हिंसा प्रमुख है। फिर वह चाहे जल, जंगल, जमीन का मामला हो अथवा प्रकृति और मानवीयता के क्षरण का। आज यही हमारे विकास की अवधारणा है। वैश्विक दौर में आर्थिक, राजनीतिक, समानता और समाज कल्याण की स्थिति अब बीते समय की बात हो चुकी है। उपभोगवाद की संस्कृति के कारण पश्चिम के देशों में मंदी का असर ऐसा पड़ा कि 99 प्रतिशत लोग आन्दोलन पर उतर आये। अमेरिका में पूँजीवाद के विरूद्ध लोग सड़कों पर उतर आये हैं, वे न हिप्पी है, न अराजकतावादी न वामपंथी, परन्तु उन्हें अपने भविष्य और सामाजिक सुरक्षा का चिन्ता है। आज लोगों के दुख का कारण तृष्णा है, वह तृष्णा पूर्ति के लिए निरन्तर प्रयासरत हैं। ऐसी स्थिति में बौद्ध दर्शन ही विश्व के लोगों को शान्ति प्रदान कर सकता है, जिसके लिए स्वयं भारत को भी आना पड़ेगा। क्योंकि भारतीय संस्कृति में आधुनिकता तथा प्रगति के साथ–साथ मानवीयता की पूरी सम्भावना है। क्या यह विडम्बना नहीं कि आज भारत में भारतीयकरण की अत्यन्त आवश्यकता है और यदि मानवता की दृष्टि से देखें तो सारे विश्व को भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों की आवश्यकता है। खास तौर से बौद्ध दर्शन के सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह सिद्धान्तों का। जहाँ तक भारतीय दर्शन के लोप हो जाने की बात है, इसके चार प्रमुख कारण हैंः–

1. लगभग 1000 वर्ष की परतंत्रता जनित हीनता तथा हीन भावना।
2. दो ढ़ाई सौ वर्ष की अंग्रेजी भाषा की परतंत्रता जनित हीन भावना तथा स्वसाहित्य की अज्ञानता।
3. पाश्चात्य भोगवाद का अंधानुकरण।
4. आबादी का विस्फोट।

आज जरूरी है कि हम भारतीय इन कारणों को अपने अन्दर से निकाल कर अपनी संस्कृति की ओर पुनः लौट और अपनी संस्कृति व धर्मों के प्रति आदर की भावना रखें। हम संकीर्णता से ऊपर उदारता, सद्भाव, सहशीलता, ममता, दया, करुणा जैसे मानवीय अलंकरणों को अपनाकर विश्व के लिए आदर्श बन सकते हैं। अहिंसा का व्रतधारण करके इस पृथ्वी पर स्वर्ग का निर्माण कर सकते हैं, क्योंकि अहिंसा ही मानवता को बचा सकती है, जिससे पूरे विश्व में सुख, समृद्धि और शान्ति का प्रसार होगा। अमन चैन से शिक्षा, स्वास्थ्य और विकास के सभी अवरूद्ध मार्ग खुलेंगे। इस सुख समृद्धि में बौद्ध दर्शन की प्रासंगिकता बढ़ जायेगी और सही अर्थों में जिम्मेदारियों का निर्वाह तब होगा जब हम अपने कर्तव्यों के प्रति सचेष्ट रहकर इसकी निगरानी रखेंगे कि हमारे द्वारा इस दिशा में जो कार्य किये जा रहे हैं वे उपयुक्त और अनुकूल हैं या नहीं। जैसा कि इस सन्दर्भ में सम्राट अशोक कहता है कि ''मनुष्य अपने सम्प्रदाय की वृद्धि तथा दूसरे के सम्प्रदाय का उपकार करता है। सभी धर्मों के सिद्धान्तों को सुनकर बहुश्रुत होकर व्यक्ति संसार का कल्याण करता है।'' इस प्रकार धर्म के सच्चे अन्वेषक की भाँति अशोक यह विश्वास करता था कि धर्म सम्प्रदायों की संकीर्ण दृष्टि हिंसा, विभेद, अंधविश्वास और कलह का कारण बनता है। अतः धर्म के क्षेत्र में पंथ निरपेक्षता और उदारता आवश्यक है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

1. डॉ0 श्रीवास्तव कृष्ण चन्द्र, 'प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास' बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना, षष्टम संस्करण 1999
2. काणे, पाण्डुरं वामन, 'धर्मशास्त्र का इतिहास', प्रथम भाग, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, 1992
3. झा और श्रीमाली 'प्राचीन भारत का इतिहास' हिन्दी माध्यम कार्यालय निदेशालय दिल्ली, विश्वविद्यालय, 1998
4. अमर उजाला, 7 सितम्बर 2009, पृ0 11
5. दैनिक जागरण, 20 फरवरी 2012, पृ0 9
6. राष्ट्रीय सहारा, 22 अप्रैल 2012, पृ0 11
7. हिन्दुस्तान, 22 अक्टूबर 2011, पृ0 12